पैट्रोलिक कपमार्क, 10 हजार वर्ष, प्राचीन मैसोलेथिक रॉक आर्ट, रॉक पेंटिंग जिसमें जैन दर्शन के महज़्वपूर्ण गूढ़ रहस्य छिपे हैं। गले में पहनने वाले मिट्टी पाषाण के मनके से लेकर गुप्तकालीन एवं प्रतिहार कालीन मूर्ति शिल्प, चंदेल कालीन बावडी, स्थापत्य जिन मंदिरों के समूह जिनमें संवत् 1123, 1188, 1195, 1202, 1203, 1490, 1548, 1586, 1885 से आज तक की मूर्तियाँ अन्वेषित की गयी हैं।

यह पुराताज़्विक सज़्पदा जैनधर्म की प्राचीनता उद्भव एवं विकास के सशक्त साक्ष्य नवागढ़ को प्रागैतिहासिक धरोहर का विशाल क्षेत्र घोषित करते हैं।

ऐसे प्रागैतिहासिक पुरा सज़्पन्न क्षेत्र के टीलों में न जाने कितने रहस्य संरक्षित हैं, जो भारतीय संस्कृति की अमूल्य विरासत को अपने अंदर समेटे हुये है। डॉ. मारुतिनंदन प्रसाद तिवारी, डॉ. गिरिराज कुमार जैसे पुरातज़्वविद जैन दर्शन के इन नवागढ़ के साक्ष्यों का अन्वेषण करके गौरवान्वित हैं। उनका कहना है हमने कई क्षेत्रों में कार्य किया परन्तु नवागढ़ जैसी पुरा सज़्पदा अत्यंत विलक्षण एवं विशिष्ट है।

मुझे ऐसी साइट पर कार्य करने का सौभाग्य ब्र, जयकुमार जी निशांत, श्री संजय मंजुल सर एवं मेरे निर्देशक डॉ. प्रकाशराय के सद्प्रयास एवं आशीर्वाद का फल है। शासन प्रशासन से अनुरोध है ऐसे क्षेत्रों में अन्वेषण कर भारतीय संस्कृति के विशेष आयाम स्थापित करें।

सहायक अधीक्षण, पुरातज़्वविद संस्कृत अभिलेख, पं. दीनदयाल उपाध्याय पुरातज़्व संस्थान, ग्रेटर नोयड़ा।

नवागढ़ मूर्तियों का कला वैशिष्टय

शोध छात्रा: श्रीमती अर्पिता रंजन, आरा

जैनधर्म प्राकृतिक धर्म है, इसका आदि अंत नहीं है, इसका सिद्धांत है ''वत्थु सहावो धज़्मो'' वस्तु का स्वभाव ही धर्म है, जैसे अग्नि में उष्णता, गन्ने की मिठास, नीम का कड़वापन उनका स्वभाव है, यही उसका धर्म है जो हमेशा रहेगा। उसी तरह जीव आत्मा का स्वभाव ज्ञान एवं चेतना है।

जैन सिद्धान्तानुसार प्रत्येक आत्मा स्वतंत्र है, पेड़-पौधे से लेकर चीटी, छिपकली, बन्दर, मनुष्य सभी जीव सत्कर्म करके आत्मोन्नति करते हुए संसार के जन्म-मरण एवं दुखों से छुटकारा पा सकते हैं।

विलक्षण धर्म- जैनधर्म में भक्ति के लिये मूर्तियों की प्राणप्रतिष्ठा करके उनकी स्थापना की जाती है, मूर्ति के माध्यम से उस मूर्ति में जिनके गुणों का गुणारोपण किया गया है उनकी पूजा की जाती है अर्थात् मूर्ति के साथ मूर्तिमान की पूजा की जाती है। जैसे जिस मूर्ति में ऋषभदेव के गुणों की स्थापना की जाती है उससे ऋषभदेव की आराधना की जायेगी तथा जिसमें महावीर के गुणों की स्थापना की गई है, उससे महावीर की आराधना की जायेगी।

जैनधर्म में भगवान् (केवली) अनंत हो सकते हैं परन्तु तीर्थंकर चौबीस ही होते हैं। काल क्रमानुसार प्रत्येक अवसर्पिणी एवं उत्सर्पिणी में 24-24 ही तीर्थंकर होते हैं। वर्तमान काल में तीर्थंकरों का सद्भाव न होने के कारण उनकी प्रतिकृति (मूर्ति) में उनके गुणों का आरोपण करके पूजा की जाती है।

कला वैशिष्ट्य- तीर्थंकरों के जन्मस्थान, शरीर, दीक्षा स्थान, आयु एवं निर्वाण में भिन्नता होते हुए भी उनके गुणों में भिन्नता नहीं होती- सभी में 1008 शुभलक्षण एवं उन पर आधारित नाम एक समान होते हैं। उसका वैशिष्ट्य प्रागैतिहासिक अतिशय क्षेत्र नवागढ़ में संगृहीत मूर्तियों में मिलता है। मुझे कई जैन तीर्थों पर अन्वेषण का सौभाग्य मिला, पर जो वैशिष्ट्य नवागढ़ में मिला अन्य कहीं नहीं मिला।

जब क्षेत्र निर्देशक ब्र. जयकुमार 'निशांत' जी पहली बार लाल किला स्थित कार्यालय में आये और आपने डॉ संजय मंजुल डायरेज़्टर एवं इंजी. पी. सी. जैन को नवागढ़ के फोल्डर एवं पुरा सज़्पदा के चित्र दिखाए, तो मेरी जिज्ञासा बढ़ी। श्री निशांत

जी के जाने के बाद मैंने श्री पी. सी. जैन से इस क्षेत्र की जानकारी प्राप्त की तो मुझे लगा यहाँ का भ्रमण अवश्य करना चाहिए।

मैं अपनी बहिन के साथ नवागढ़ पहुँची। वहाँ कई मूर्तियों के साथ पुरापाषाण कालीन 2 लाख से 5 लाख वर्ष प्राचीन औजार, हजारों वर्ष प्राचीन संत साधना शैलाश्रय, पैट्रोलिक कपमार्क, शैलचित्र, शैलोत्कीर्ण मुद्रा, धातु, काष्ट उपकरण प्राचीन राजाओं एवं रानियों के मुकुट सहित शीर्ष अत्यंत विलक्षण हैं।

मैंने नवागढ़ में प्राप्त अभिलेखों के आधार पर शोध प्रबंध का कार्य श्रद्धेय डॉ. प्रकाशराय के निर्देशन में ब्र. निशांत जी एवं सरिता जी दिल्ली के सहयोग से आरंभ किया है।

मूर्ति वैशिष्ट्य - पार्श्वनाथ भगवान् की पद्मासन विशाल प्रतिमा जिसके अंगोपांग तोड़कर लोग कुएँ पर पाट के रूप में उपयोग करते थे, जिसे पं. नीरज जी सतना नवागढ़ संग्रहालय में लेकर आये थे।

अन्य मूर्ति जो कुएँ पर पड़ी थी ग्रामीण उस पर लोहे के औजारों की धार बनाते थे तथा महिलाएँ उस पर जल भरने के घड़े रखती थीं। वर्षों पश्चात् उस पाषाण को जब देखा गया तो उसमें सातवीं सदी की प्रतिहार कालीन ऋषभदेव की मूर्ति उत्कीर्ण थी।

भगवान् पार्श्वनाथ की मूर्ति में जहाँ सर्प कुण्डली का आसन है ऊपर की ओर दो चंवरधारी हैं तथा नीचे की ओर धरणेन्द्र पद्मावती भी चंवर धारण किये हैं। इस प्रकार एक प्रतिमा में 4 चंवरधारी अन्य मूर्ति में देखने को नहीं मिले।

डॉ. मारुतिनंदन प्रसाद तिवारी एमिरेट्स प्रोफेसर काशी हिन्दू विश्व विद्यालय वाराणसी के अनुसार इस पार्श्वनाथ बिज्ब में नीचे कुवेर यक्ष एवं अज़्बिका यक्षी अंकित है जो नेमिनाथ के यक्ष-यक्षी हैं। तीर्थंकर गुणों में समानता को मूर्ति में कैसे दर्शाया जाये तो शिलाकार ने इसमें धरणेन्द्र पद्मावती के साथ कुवेर एवं अज़्बिका का अंकन करके अद्वैतवाद को दर्शाने का प्रयास किया है।

जैन मूर्ति शिल्प वैशिष्ट्य - जैनप्रतिमा विज्ञान के अनुसार प्रतिमा के सभी अंगोपागों माप निश्चित है, उनमें हीनाधिकता नहीं होती है अन्यथा प्रतिमा दोषपूर्ण मानी जाती है। जैन मूर्ति शिल्प की विशेषता है कि उसका कोई भी अंग यथा शीर्ष, वक्षस्थल, स्कंध, हस्त, अँगुली, उदर एवं कटि भाग, जंघा, घुटना, चरण, परिकर या

पादपीठ मिले तो उससे जैन मूर्ति का अस्तित्व सिद्ध होता है तथा उससे मूर्ति के आकार का ज्ञान भी किया जा सकता है।

नवागढ़ प्रवास में मैंने पाया कि शिल्पकार ने अपनी कल्पना शक्ति से दिगज़्बरत्व में भी कला वैशिष्ट्य एवं कौशल का प्रदर्शन किया है। मूर्ति परिकर सज्जा, गजराज, मृदंगधारी, त्रिछत्र, माल्याधर, चंबरधारी, यक्ष, यक्षी, समर्पित श्रावक, पादपीठ आसन, लांक्षन, श्रीवत्स, केशविन्यास, लज़्बकर्ण, नाभि सौन्दर्य मिलकर वीतरागता को उभारते हैं। उसका सौन्दर्य, मनोज्ञता, एवं दिगज़्बरत्व चुज़्बकीय आकर्षणमय होता है। नवागढ़ में ऐसे कई मूर्ति शिल्प संगृहीत हैं।

मूलनायक का वैशिष्ट्य - मूलनायक अरनाथ स्वामी का गाज़्भीर्य, नेत्राकृति, नासिका, ओष्ठ, लज़्बकर्ण, वक्षस्थल, श्रीवत्स के साथ मानवाकार उदरावलि, पेडू, सुडोल जंघा, अत्यंत विलक्षण है जिसका शिल्प सभी को आकर्षित करता है।

हथेली और अँगुलियों का वैशिष्ट्य है कि मध्यमा अँगुली हथेली की ओर है शेष तीन अँगुलियाँ अँगुठ से भिन्न हैं। इस मुद्रा का वैशिष्ट्य अन्वेषण का विषय है। डॉ. वृषभ प्रसाद लखनऊ, डॉ. यशवंत मलैया कोलोराडो स्टेट युनिवर्सिटी अमेरिका ने भी इसको इंगित किया है।

अन्य प्रतिमाओं का वैशिष्ट्य- मानस्तंभ में प्रायः चारों और तीर्थंकर बिज़्ब होते हैं परन्तु यहाँ प्राप्त चारों मानस्तंभों में तीन ओर तीर्थंकर एवं एक ओर उपाध्याय बिज़्ब अंकित हैं।

एक खण्डित उपाध्याय बिज़्ब में पादपीठ में चिह्न के रूप में मयूर पिच्छी का अंकन है जो अन्य कहीं दृष्टव्य नहीं है। खण्डित उपाध्याय बिज़्ब में लज़्ब शास्त्र को अँगुलियों की विशेष मुद्रा में उत्कीर्ण किया गया है।

कुमार अकलंक एवं निकलंक एक ही पाषाण फलक में उत्कीर्ण हैं, अग्रज के हाथ में लज़्ब शास्त्र एवं कलम है। नवागढ़ में संगृहीत 9 उपाध्याय बिज़्ब यहाँ गुरुकुल परज़्परा के साक्ष्य हैं।

यहाँ प्राप्त धातु एवं काष्ठ उपकरण, विविधता लिये हैं मैं चाहती हूँ देश के विज़्यात प्रतिमा विज्ञानी, पुरातज़्वविद् एवं इतिहासद्दि प्रागैतिहासिक नवागढ़ क्षेत्र में आकर पुरारहस्यों का अन्वेषण करके भारतीय संस्कृति के विशिष्ट आयामों को उद्घाटित करें। जो हमारी नवोदित पीढ़ी को विरासत के रूप में प्राप्त हों।